आलस्य और अलबेलापन -

अव्यक्त बापदादा :- (31.12.2008)

➳ _ ➳ इस वर्ष का होमवर्क बापदादा ने दे दिया है। वर्ष को इस विधि से मनाना। और बापदादा ने जो इस तारीख के लिए होमवर्क दिया था वह भी बापदादा ने देखा और सुना। सिर्फ जो संकल्प किया है उसमें दृढ़ रहना। अलबेलापन नहीं लाना।

➳ _ ➳बापदादा ने सुनाया था अलबेलेपन के शब्द कौन-से हैं? एक गे गे, और दूसरा तो तो करना तो है, यह दोनों शब्द अलबेलेपन के हैं। तो जो भी संकल्प किया है उसमें अभी तो अपनी साइन की है लेकिन उसमें दृढ़ संकल्प की गवर्मेन्ट की स्टैम्प लगाना जो कोई नहीं मिटा सकता। दृढ़ता अपने जन्म का सबसे बड़ा गिफ्ट समझना।

➢➢ दृढ़ता को अपने जन्म का सबसे बड़ा गिफ्ट समझना है...

➳_ ➳ केवल इच्छा करने मात्र से कुछ नहीं हो जाता...

→ वो इच्छा दृढ हो जाये... बस यही इच्छा ही सब कुछ है...

■ जब ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार हुए, तो लगन लग गयी थी...

➢➢ एकांत प्रिय होने पर ही व्यक्ति अंतर्मुखी हो सकता है...

➳_ ➳ तभी स्वयम के संस्कारों को देख सकते है... उनमें परिवर्तन ला सकते हैं...

→ आजकल बाह्मुखता बहुत है.. हम मेसेज, email कर सकते हैं... लेकिन आपस में बातचीत नहीं होती...

■ इनके एडिक्शन से दूर रहना है..

▶ निश्चित टाइम कर दें कि आधा घंटे के लिए ही सोशल मीडिया का प्रयोग करना है...

➢➢ बाहरी वायुमंडल का हम पर प्रभाव न हो...

➳_ ➳ छोटी छोटी बातों से दुःख लेने की आदत हमें बाबा से दूर करती है..

➢➢ बीजरूप स्थिति हमें बाबा से जोडती है...

➳_ ➳ तभी deep realization होता है...

➳_ ➳ तभी संस्कार परिवर्तन होते हैं...